ओ३म्

[सत्यमेवजयतेनानृतम्]

॥ पोप लीला ॥

अर्थात्

(असत्य मत खण्डन)

गुरु विरजानन्द ... सन्दर्भ पुस्तकालय ... 5063 ... परिग्रहण क्रमांक ... दयानन्द

जगन्नाथ वेद मतानुयायी द्वारा विरचित, और प्रकाशित

"वेदैर्विहीनाश्चपठन्तिशास्त्रं शास्त्रेणहीनाश्चपुराणपाठाः ।
पुराणहीनाःकृषिणोभवन्ति भ्रष्टास्ततोभागवताभवन्ति ॥"

(अत्रिस्मृतेः ३८२)

॥ श्रीमथुराजी ॥

पण्डित बालकृष्ण ने शोध कर निज भवन

ब्रजभूषण यंत्रालय में मुद्रित

March
1887.

प्रथम बार
१००० प्रति

All rights reserved.

मूल्य प्रति
पुस्तक ।)

ओ३म्

पोप लीला।

(अर्थात्)

असत्य मत खण्डन।

ओ३म् विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुवयद्भद्रंतन्नआसुव
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अर्थात्– (देव) हे सूर्य्यादि सर्व विद्या प्रकाशक (सवितः) हे सर्व जगदुत्पादक (नः) हमारे (विश्वानि) संपूर्ण (दुरितानि) दुःखों को (परासुव) तुम दूर करो (नः) हमारे लिये (यत्) जो (भद्रं) सुख हैं (तत्) उन को (आसुव) तुम प्राप्त करो हे परमात्मन् (आध्यात्मिक) रोग शोक शरीर पीडा आदि (आधिभौतिक) शत्रु सिंह सर्प आदि से पराजय और परास्त आदि (आधिदैविक) अति शीतोष्ण वर्षा आदि होना वा न होना आदि जो ये तीन प्रकार के क्लेश और संताप हैं उन को तुम दूर करो।

लेख ग्रन्थ कर्त्ता का।

विदित हो कि एक सभा हुई उस में सब शास्त्र के जानने वाले इकट्ठे हुए इस कारण कि किसी वजह से सत्यासत्य का निर्णय हो सो प्रथम दिन का व्याख्यान लिखा जाता है।

लेक्चर सभा पति का।

परमेश्वर के गुणानुवाद के पश्चात् धन्य है इस आर्य्यावर्त्त देश पुनीत भूमि को व यहां के निवासिओं को जो सदैव वेद मत मंडन और असत्य मत खंडन में प्रवृत्त रहते हैं और बाजे बाजे एसे मुल्क हैं कि ज-

हां कई कई महिनों की लंवी रात होती है मसलन् एशिया रूस की तर्फ एसी शिद्दत की सर्दी पडती है कि महिनों की लंवी रात होती है वहां के मनुष्यों को शावस है जो एसी मुसीवत सहते हैं और खुशी रहते हैं पर में उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर का कोटानुकोट शुक्रिया अदा कर्त्ताहूं कि हम लोगों को एसी भूमि में पैदा किया जहां तीनों मौसम की वहार है न कि ९ महिने की सर्दी खा कर रातों अँधेरे में अपनी जिंदगी वशर करते इति । इस पर पुराण मत वाला वोला ।

यज्ञदत्त– असत्य मत कौन कौन हैं ।

देवदत्त– जो वेद विरुद्ध है ।

यज्ञदत्त– क्या सव के सवही वेद विरुद्ध हैं नहीं नहीं एसा मत कहो देखो थोडे से दिन की वात है कि इन्द्रप्रस्थ वाले ब्राह्मणों ने सनातन धर्म्म प्रकाशक नामा पत्र छापा था जिस में लिखा था कि हम वेदानुकूल जो सत्य धर्म्म शास्त्र हैं उन का व्याख्यान लिखेंगे सो उन्हों ने पुराणों को वेदानुकूल होने से नास्तिक का संवाद खंडन कर आस्तिक का उत्तर रक्खा है तथा सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्यभूमिकादिक का वेद विरुद्ध होने से उस का खंडन किया है सो क्या ठीक नहीं है ।

देवदत्त– पक्षपात रहित हो कर सुनों अष्टादश पुराणों को जो १ व्यासजी के वनाये हुए कहते हैं सो कभी नहीं हो सक्ते क्यों कि व्यासजी का कहन वेद विरुद्ध तथा परस्पर विरोध नहीं हो सक्ता क्यों कि व्यासजी ने ब्रह्मसूत्र वनाया है सो सवका सव वेदानुकूल है और यह पुराण तो मत वादियों ने व्यासजी के नाम से रच अपने स्वार्थ के हाथ कहानीयां डाल पूरा कर लिये हैं इस वास्ते अष्टादश पुराण वेद विरुद्धही हैं

यज्ञदत्त– इस में प्रमाण क्या ।

देवदत्त– प्रथम तो १ स्थल पद्मपुराण काही देखो जिस में विष्णु की वडाई और ब्रह्मा शिव की निन्दा है जैसें ।

रजस्तमोगुणोद्रेकौ विधीशानौसुरोत्तमौ । शत्तौमयान

पूज्यौतौ विप्राणामृषिसत्तमाः ॥ शुद्धसत्वमयोविष्णुः कल्याणगुणसागरः । नारायणःपरंब्रह्म विप्राणांदैव तंहरि रिति ॥

अर्थात्– ब्रह्मा और रुद्र जो सब देवों में श्रेष्ट हैं उन में रजोगुण और तमोगुण अधिक है हे! श्रेष्ट ऋषियो में ने उन को श्राप दिया है वे ब्राह्मणों से पूजा पाने योग्य नहीं हैं परन्तु विष्णु शुद्ध और सतोगुण है जो मंगल गुणों का समुद्र है और वह नारायण परब्रह्म रूपी है इस कारण हरिही ब्राह्मणों का दैवत है। अब इसही पद्मपुराण का दूसरा स्थल देखो जिस में विष्णु की निन्दा है जैसें।

विष्णुदर्शनमात्रेण शिवद्रोहःप्रजायते ।
शिवद्रोहान्नसन्देहो नरकम्यातिदारुणम् ॥
तस्माच्चविष्णुनामापि नवक्तव्यंकदाचन ।

अर्थ यह है कि जब लोग विष्णु का दर्शन करते हैं तब महादेव क्रोधित होता है और उस के क्रोध से मनुष्य घोर नर्क में जाते हैं इस कारण विष्णु का नाम कभी न लिया चाहिये तथा और इसी पुराण में परस्पर विरोध देखो जैसे।

एषदेवोमहादेवो विज्ञेयस्तुमहेश्वरः ।
नतस्मात्परमङ्किञ्चित् पदंसमधिगम्यते ॥

अर्थ– यह है कि महादेव को महाईश्वर जानना चाहिये और यह मत समझो कि उस से कोई बडा है फिर इस से विरुद्ध देखो।

वासुदेवंपरित्यज्य योन्यदेवमुपासते ।
तृषितोजान्हवीतीरे कूपंखनतिदुर्मतिः ॥

अर्थ– यह है कि जो विष्णु को छोड के दूसरे देव को मानते हैं सो उस मूर्ख के समान है जो गङ्गा के तीर प्यासा बैठ कूंआ खोदता है।

सिद्धान्त यह है कि अष्टादश पुराणों में परस्पर विरोध है सो १ व्या

सजी के कहे नहीं हो सक्ते तथा सृष्टि विषय में कहीं किसी से सृष्टि की उत्पत्ति और कहीं किसी से सृष्टि की उत्पत्ति लिखी है गोया १ बातही नहीं है इस वास्ते वेदानुकूल नहीं हो सक्ते तथा यह पुराण एक समय बने भी नहीं है तथा जो जिस के मन में आया सोही कथा कहानी दृष्टान्त घड पुराणों में डाल दिये वह भी व्यासजी के नाम से बजने लगे जैसे जगन्नाथ महात्म स्कंध पुराण का है और जगन्नाथ का मंदिर सन् ११७४ ईसवी में उडीसे की गद्दी पर अनंगभीमदेव था उस ने बनवाया था तो स्कंध पुराण भी गोया उसी वक्त बना क्योंकि मनु में तो जिकर हैही नहीं अथवा जगन्नाथ महात्म उस वक्त उस पुराण में डाला समझो क्योंकि बिना चीज के कोई किसी का जिकर नहीं करता मसलन मैं ने "प्रष्णमालिका" पुस्तक का खंडन किया तो "प्रष्णमालिका" पुस्तक इस पुस्तक से पहिले की बनी हुई थी जो मैं ने उस का हाल लिखा नहीं तो मुझे क्या खबर थी क्यों कि जीव सर्वज्ञ नहीं है जो आगे की खबर होवे १ परमेश्वर सर्वज्ञ है इस से जाना जाता है कि पुराणों को बने बहुत दिन नहीं हुए हैं लिंग पुराण जैसे शैवियों का बनाया हुआ है उस में यह लिखा है ।

शंखचक्रेतापयित्वा यस्यदेहःप्रदह्यते ।
सजीवन्कुणपस्त्याज्यः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥

अर्थात्– तपाये हुए शङ्ख चक्र से जिस का शरीर जल गया हो वो जीता हुआही चाण्डाल की तरह सब धर्म्मों से निकासा हुआ त्याग देने के योग्य है क्या यह प्रमाण शठकोप से पहिले का है नहीं यह मत तो शठकोप ने हीं चलाया है तथा आदित्य पुराणादि में विलायत जाने का दोष भी लिखा है तो अर्जुन नाग देश में अर्थात् एमेरिका क्यों गये थे एसे २ प्रमाणों से सिद्ध होता हैं कि पुराण तो अबहीं नये बने हैं तथा ब्रह्मांड पुराण में से १ गुणी ने ३८ श्लोक तमाखु खाने के निषेध में निकाले हैं जैसे

ब्रह्मोवाच ।

प्राप्तेकलियुगेघोरे सर्ववर्णाश्रमेतराः ।

तमालंभक्षितंयेन सगच्छेन्नरकार्णवे ॥

अर्थात्- दोहा, महाघोरकलियुग विषे, वरणाश्रम पुनि और।
जे तमाल भक्षन करैं, ते पावैं नरक अघोर॥

इत्यादिक पुस्तक बढने के भय से और नहीं लिखे तथा १ ब्राह्मण कहता है कि पद्मपुराण के २२ वें अध्याय में हुक्का पीने का दोष लिखा है जिस के २ श्लोक बतावे हैं उस में से १ लिखताहूं।

धूम्रपानरतंविप्रं दानंकृत्वेतियोनरः।
दातारोनरकंयांति ब्राह्मणोग्रामशूकरः॥

अर्थ- स्पष्ट है इस से नहीं लिखा अब देखिये जब तमाखू खाने का निषेध इस पुराण में है तो हम निःसन्देह यह बृतान्त पीछे से मिलाया गया कहते हैं क्यों कि तमाखू का कहीं कोशनिघण्टु में तो नाम है नहीं कोई कहे वैद्यक में है सो भी नहीं किसी ने असल दवा का तो नाम जाना नहीं गुण रूप मिला के तमाखू रख लिया तो खबर नहीं मगर शास्त्रों में तो है नहीं क्योंकि यह अन्य देश की वस्तु है थोडेही दिनों से यहां आई है एक पुरुषार्थी मनुष्य ने ठीक करके लिखा है कि तम्बाकू जहांगीर बादशाह के इश्तिहार से जिस का जिकर उस ने अपनी किताब में लिखा है मालूम होता है कि यह काम की चीज पहलेही पहल उस के अथवा उस के बाप अकबर के समय में एमेरिका से फरङ्गी लोग लाए थे इस बात के लिखने से लोग कभी इत्मीनान नहीं लावेंगे मगर मैं इस में १ सच्चा दृष्टांत देताहूं कि आलू और गोभी भी एमेरिका से आये हैं यह यहां का दरखत नहीं है अर्थात् यहां की चीज नहीं है अरसा ६० वर्ष का हुआ कि आलू को बहुत कम लोग खाते थे और गोभी तो अबतक भी बहुत से विचार रहित मनुष्य कम खाते हैं बसबब अङ्गरेजी तर्कारी के और इस बात को अभीतक बहुत से मनुष्य जानने वाले वृद्धावस्था के मौजूद हैं कि आलू और गोभी तर्कारी नहीं है यह अङ्गरेजी तर्कारी हैं परन्तु यहीं पैदा होने से और बहुत फैलने से तथा तर्कारी सुस्वाद होने से प्रायः सब

पुस्तक नं ...... 15 हिसार

लोग खाने लगे और फिर जादा प्रचार होने से इन की असली जड भी यहीं की वतावेंगे अगर उन से कोई कहेगा कि यह यहां की वस्तु नहीं है तव वह कहेंगे तुम झूट वोलते हो क्योंकि ऊपर के लोग मरते जायेंगे नये नये पैदा होते जायेंगे सव भूल जायेंगे और उन की तर्कारी स्वाद देख वनाने की तर्कीव पुस्तकों में लिखेंगे जैसे व्यंजन प्रकाशादि अनेक पुस्तकों में आलू का शाक गोभी का शाक वनाने की तर्कीव तथा मसाला पानी डालने का अन्दाजा लिख रक्खा है सो इस से कदीमी गोभी आलू यहीं का वतावेंगे क्या इन प्रमाणों से आलू गोभी यहीं का वजने न लगेगा इत्यादि इस से मेरा कहना यह है कि वहुत से महात्म्य वगैरः पुराणों में पीछे से ब्रह्मा विष्णु नारद शिव वगैरः के सम्वाद से रच डाल दिये हैं

यज्ञदत्त– इस में प्रमाण क्या ।

देवदत्त– इस में प्रमाण वडा भारी वेद से भिन्न तथा परस्पर विरोध तथा पद्मपुराण में हीं लिखा है जैसे ।

मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नंवौद्धमेवच ।
मयैवकथितंदेवि कलौब्राह्मणरूपिणा ॥

अर्थात्– माया वाद (जीव ब्रह्म की एकता) असत् शास्त्र जो गुप्त से वौद्धही है हे देवी कलियुग में ब्राह्मण रूप से मैं नेही कहा है देखो यहां कैसी चलाकी की है कि आपही शिव वन वैठे सो ठीक तो है शिव कहां जव अपने तै आपही कहें (ब्रह्माहमस्मी) कि ब्रह्म मैं हूं मगर मैं उन से पूछताहूं कि परमेश्वर ने तो सारी सृष्टि वनाई है जैसे ।

तस्माच्चदेववहुधासंप्रसूताः साध्यामनुष्याःपशवो वयांसि । प्राणापानौव्रीहियवीतपश्चा श्रद्धासत्यं ब्रह्मचर्य्यंविधिश्च ॥ २. मुण्ड के १-७

अर्थ– उसी से अनेक प्रकार देवते साध्य मनुष्य पशु और पक्षी उत्पन्न हुए हैं तथा प्राण अपान व्रीहि यव तप श्रद्धा सत्य ब्रह्मचर्य्य और विधि सिद्धान्त यह है कि सव चीजें परमेश्वर से वनी मगर १ चिंउ-

टी तौ ब्रह्माहमस्मी कहने वाला बना दे सो कभी नहीं खैर हमें इन झग डों से क्या मतलब प्रसंग पर देखा जायगा पूर्व लिखित अभिप्राय के श्लोक मेरे पास बहुत हैं कि जिस का सार यह है कि सारे मत और शास्त्र इन में मनुष्यों ने ब्रह्मा वगैरः के नाम से रच लिये विस्तार के भ य से कम लिखे और वायुपुराण में गया महात्म्य है तथा पोप लोग पु-राणों के अनुसार कहते हैं कि सूर्य्य कश्यप का पुत्र है सो कश्यप का पुत्र कैसे हो सक्ता है क्यों कि सृष्टि की आदि में ब्रह्मा उत्पन्न हुआ ब्र-ह्मा से मनु मनु से अङ्गिरा अङ्गिरा से कश्यप और कश्यप से सूर्य्य उ-त्पन्न हुआ यदि यही बात सच्ची है और यही सूर्य्य (कौन सा जो आ समान पर है) कश्यप का पुत्र है तौ क्या-ब्रह्मा से कश्यप तक अर्थात् चार पीढी लों जगत में अन्धकारही छाय रहा था सो नहीं एसे एसे झूठे गपोडे पुराणों में भर पूर हैं कि जिन का वारापार नहीं तथा और देखो रामचन्द्र से प्रल्हाद पहले हुआ है वह भी राम राम हीं कहता था भला राम तौ प्रल्हाद से पीछे हुआ उस ने कैसे नाम यही लिया यह बात भी पीछे से घड के डाली है।

यज्ञदत्त– तुम तौ पुराणों को एसा कहते हो देखो मनु के तीसरे अ ध्याय में पुराण इतिहास सुनना लिखा है तथा छान्दोज्ञ उपनिषद में पुरा ण का जिकर आया है सो क्या झूठ है।

देवदत्त– हे! मित्र जरा तुम अपनी भी बुद्धी काम में लाओ देखो तु म्हारे ही कहने मूजब व्यासजी तौ भारत के वक्त में हुए हैं और मनु तौ भारत से पहले का है जैसे।

पुराणंमानवोधर्म्मः साङ्गोवेदश्चिकित्सितम्।
आज्ञासिद्धानिचत्वारि नहन्तव्यानिहेतुभिः॥

इस से स्पष्ट है कि मनु पहले का है और व्यासजी महाभारत के समय में थे तौ तुम्हारे ही अनुकूल अर्थात् व्यासजी के बनाये पुराणों का जिकर मनु में क्यों कर आसक्ता है मनु में तथा छान्दोज्ञ में पुराण करके ब्राह्मण ग्रन्थों का ही नाम है जैसे ग्रह्य सूत्र का वचन है।

ब्राह्मणानीतिहासान्पुराणानिकल्पान्गाथानाराशंसी रिति

अर्थात्– जो गोपथ शतपथादिक ब्राह्मण (पुस्तक) हैं वह इतिहास पुराण कल्प गाथा और नाराशंसी पांच नाम हैं इस से सिद्ध हुआ कि अष्टादश पुराणों का जिकर मनु में तथा छान्दोज्ञ में नहीं हैं क्यों कि यह नवीन बने हुए है।

यज्ञदत्त– क्या सृष्टि एकही दफे की उत्पन्न हुई भी है जो अष्टादश पुराण का मनु में हवाला न हो सृष्टि तौ वारम्वार होती है इस मनु से पहिले के जो पुराण थे अर्थात् यही अष्टादश विन का हाल होगा।

देवदत्त– वेशक सृष्टि वार वार उत्पन्न और क्षय होती परन्तु जव २ सृष्टि उत्पन्न होगी तभी मनु पहले होगा और शास्त्रादि पीछे वनेंगे इस वास्ते मनु में तथा छान्दोज्ञ में इन अष्टादश पुराणों का जिकर नहीं हो सक्ता किंतु ग्रह्यसूत्र के अनुसार ब्राह्मण ग्रंथों का ही पुराण नाम होगा अर्थात् लिखा जायगा इस सें यही सिद्ध हुआ कि यह अष्टादश पुराण सारे न तो १ व्यासजी के कहे हुए हैं और न वेदानुकूल हैं जव इन पुराणों का यह हाल है तौ पदमैय्या का रुक्मिनी मङ्गल व सूरदास का कहन व तुलसी दास का कहन व जैदेव वगैरः का सारा कव सत्य हो सक्ता है इस विषय को तौ पण्डित श्रद्धाराम फलौरी ने भी धर्म्म रक्षा पुस्तक में स्वीकार किया है।

यज्ञदत्त– अजी ऊपर के भक्तों का तौ कहन भक्ती से है न कि पाप दृष्टि से।

देवदत्त– वाह क्या आप की समझ है जो कि पुरुष जितेन्द्रिय हो उसे कहें व्यभिचारी जैसे कुब्जा के वावत् श्रीकृष्ण को लिखा है तथा साहूकार को कहें चोट्टा जैसे माखन चौर वगैरः यह दोष देने? नहीं नहीं श्रीकृष्ण एसे नहीं थे जो पराई स्त्रियों से व्यभिचार करते जैसे ब्रह्मवैवर्त्त के कृष्ण जन्मखण्ड के २८ वें अध्याय में ३ रे श्लोक से १४ वें श्लोक तक क्या क्या उम्दह लिख रक्खा है कि जिस के लिखने से शर्म आती है तथाइसी अध्याय के ७६. ७७. ७८. श्लोक को देखो कैसी कैसी फोश वातें श्री-

कृष्ण के पीछे चपे की हैं।

यज्ञदत्त– एक दो तो जरूरही प्रमाण श्लोक के दो।

देवदत्त– एक दो क्या चहिये जितने लो मगंर वक्त जाने से १ ही प्रमाण सुनाता हूं जैसे।

पुनश्चकारशृंगारं गोपीनांचित्तहारकः।
किङ्किणीनांकङ्कणानां नूपुराणाञ्चनारद ॥

अर्थ– गोपियों के दिल चुराने वाले ने फिर जमा किये जमा के शुरू से पहिले ऐ नारद हाथ पांव और कमर के घूंघरूओं की अच्छी तरह आवाज हुई इत्यादिक बहुत श्लोक हैं क्या इसी लेख से तुम पुराण व्यासजी के बनाये हुए कहते हो रासपंचाध्याई वगरः तो बेशक बनाई ही होगी, क्यों न कहो, लेकिन एसी बातें महाभारत में तो नहीं दीखती है लेकिन बोपदेव की भागवत में व ब्रह्मवैवर्त्तादिक पुराणों में हीं भरी पडी है।

यज्ञदत्त– खैर अच्छा पुराण नहीं तो नहीं सारी स्मृतियें तो ठीक है।

देवदत्त– कदाचित् नहीं ठीक वही है जो वेदानुकूल ह वेद से विरुद्ध कभी किसी काल में भी प्रमाण नहीं हो सक्ती।

यज्ञदत्त– देखो याज्ञवल्क्य ने १८ स्मृतियें मानी हैं सो ठीक है या नहीं तथा मनु भी सारा सत्य है या नहीं।

देवदत्त– सारी स्मृतियें कब ठीक हो सक्ती हैं, क्यों कि १ सनत्कुमार संहिता में हीं बद्री महात्म्य है सो पीछे से बना है।

यज्ञदत्त– बाज बाज लोग कहते हैं कि बद्रीनाथ की मूर्त्ति शङ्कर स्वामी ने पधराई थी क्या यह भी झूंठ है।

देवदत्त– शङ्कर स्वामी ने जैनियों को परास्त किया और उन की मूर्त्तियें तुडवा दीं जो वेद से विरुद्ध चाल थीं अगर वेदानुकूल होती तो क्यों मूर्त्तियें तोडी जाती बाजी बाजी जगह उन के सामने से छिपाई हुई मूर्त्तें अब भी जमीन में से निकलतीं हैं तथा टूटी फूटी का तो अंतही नहीं बिहार में काशी में दक्षिण में सिंध में बडे बडे मकान टूटे फूटे किरोडो की

लागत के पडे है और शंकर स्वामी का मत ब्रह्माहमस्मि था अर्थात् ब्रह्म मैं हूं, वह कब पत्थर को पूजने लगे थे तथा आज तक भी उन के अनुयायी लोग पत्थर नहीं पूजते हैं और बुरा कहते हैं तो इस से सिद्ध है कि ऊपर के ऋषि मुनियों के नाम से ग्रन्थ बनाये और उसमें मूर्त्ति पूजा का विधान लिखा अगर मूर्त्ति पूजा का विधान संहिता मात्र में कोई पुरुष निकाल दे, तो हम उस की टहल करेंगे और जो कुछ बनेगा सो देंगे मित्र सब ग्रन्थों में गपोड़े घड मिला दिये तथा उन सब ग्रन्थों की व्याख्या भी भ्रष्ट कर दी कहां तक कहूं एसा कोई ग्रंथ सिवाय वेद के छोडा होगा, जिस में पोपों ने न मेल झोल करा हो और तो क्या वेदों तक का भाष्य भी बाज बाज स्वार्थियों ने भ्रष्ट कर दिया और मनु सारा वेदानुकूल तो किसी काल में भी नहीं हो सक्ता और हो भी जाता जो निर अक्षर भट्टाचार्य्य उस में अपनी कार-रवाई नहीं करते ।

यज्ञदत्त– इस में कौन कौन से श्लोक निर अक्षर भट्टाचार्य्य के गेरे हुए हैं ।

देवदत्त– देखो :–

अविद्वांश्चैव विद्वांश्च ब्राह्मणो दैवतं महत् ।
प्रणीतश्चाप्रणीतश्च यथाग्निर्दैवतं महत् ॥ अ० ९-३१७

अर्थ– इस का अभिप्राय यह है कि ब्राह्मण चाहे पढा हुआ हो चाहे विना पढा हुआ हो परम देवता है यह श्लोक स्वार्थियों ने डाला है, और सब श्लोक यह है मनु महाराज का ।

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ।
यश्च विप्रोऽनधीयान स्त्रयस्ते नाम बिभ्रति ॥ २-१५७

अर्थात्– काष्ठ का हाथी चमडे का मृग और जो ब्राह्मण वेद नहीं पढा वह केवल नामहीं धारण करते हैं अर्थात् काष्ठ का हाथी नहीं है, और चमडे का मृग मृग नहीं है इस प्रकार जो ब्राह्मण वेद नहीं पढा वह ब्राह्मण नहीं है अब देखना चाहिये मनु सरीखे विद्वान वेदों को जानने वाले

एसा परस्पर विरोध कब करते तथा मूर्ख रखने की शिक्षा क्यों देते, नहीं २ ऊपर का श्लोक तो किसी स्वार्थि के हाथ का जरूर डाला हुआ है, तथा यह भी तो बात देखो मनु महाराज ने ब्रह्मचर्य्यादि आश्रम लिखे हैं उस में यथा योग्य विद्याऽध्ययन लिखा है फिर वह भी नष्ट हो जाय और १ वह क्या सब को मूर्खही रखना प्रयोजन हो जाय सो कदापि नहीं और यह नहीं कि यही १ श्लोक पोपों का डाला हुआ है किन्तु बहुत से हैं एक दो और प्रमाण देता हूं मनु महाराज का निम्न लिखित वचन वेदानुकूअ हैं क्यों कि वेद में लिखा है " माहिंस्यात्सर्वभूतानि " अर्थात् किसी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिये इसी माफिक मनुजी कहते हैं जरे।

नाकृत्वाप्राणिनांहिंसां मांसमुत्पद्यतेक्वचित्।
नचप्राणिवधःस्वर्ग्य स्तस्मान्मांसंविवर्जयेत्॥

अर्थात्— प्राणियों को हिंसा के विना मांस उत्पन्न नहीं होता और प्राणियों का वध स्वर्ग का हेतु नहीं है इस लिये मांस को अवश्य त्याग करना चाहिये यह श्लोक तो वेदानुकूल है अब दूसरा श्लोक किसी अन्याई का इस में डाला हुआ सुनो जो मनु से भी विरुद्ध और वेद से भी विरुद्ध

नमांसभक्षणेदोषो नमद्यनचमैथुने।
प्रवृत्तिरेषाभूतानां निवृत्तिस्तुमहाफला॥

अर्थात्—मांस खाने में शराब पीने में विषय भोग करने में दोष नहीं (क्यों कि) यह तो जीवों का स्वभाव ही है (मगर) छोड दे तो अच्छा है वाहरे ! अन्याई क्या क्या जीवों का स्वभाव बनाया है अरे तै ने यह न लिख दिया कि आदमी को मार कर खावे जो पुरुषार्थी मनुष्य तुझे मजा चखा देता, विचारे जीव अनबोल ही को जबर-दस्ती मार कर खावे हैं, एसी बातों के लिख ने से रोम खडे होते हैं, जिस म्लेक्ष ने यह श्लोक डाला होगा उस का कैसा जिगर होगा, और वह विचारा भी क्या करे, जब हमारे ही देश का रहने वाला उस का साथ दें, क्यों कि इसी श्लोक के अर्थ सिद्ध करने को वेदार्थप्रकाश नाम पुस्तक में चाहें सो कपोल कल्प

ना की हैं, धन्य है उस श्रीगोपाल को, निदान एसे एसे लेख से जो वेद विरुद्ध हैं, तथा परस्पर विरोध है, कब मनु महाराज का हो सक्ता है, स्वार्थियों का मत ही निराला है वह किसी की रवा नहीं समझते (स्वार्थिदोषो न्नपश्यति) जो स्वार्थ साधन में तत्पर हैं वह अपने दोष पर ध्यान नहीं करते किन्तु दूसरों की हानि हो तो हो, केवल मुझ को सुख होना चाहिये, जभी तो वेदभाष्य भ्रष्ट कर अर्थ का अनर्थ दिखा स्वार्थ के हेतु अश्वमेध गोमेध के अर्थ रच लिये ।

यज्ञदत्त– तुम ने क्यों कर जाना कि मनु में और लोगों ने श्लोक डाल दिये ह ।

देवदत्त– परस्पर विरोध से तथा १ प्रमाण भी देता हूं, वह प्रमाण भी मनु में हीं ह जैसे ।

यज्ञार्थंब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्तामृगपक्षिणः ।
भृत्यानांचैववृत्त्यर्थं मगस्त्योह्याचरत्पुराः ॥

अर्थ– इस का यह है कि यज्ञ में श्रेष्ट मृग पक्षी ब्राह्मणों से मारने योग्य है क्यों कि अगस्त्य मुनिजी ने भी पूर्व काल में एसा ही किया है, वाहरे वाह श्लोक घडने वाल यह नहीं सोचा कि मनुजी अगस्त्य मुनि का क्यों प्रमाण देत क्यों कि मनुस्मृति तो प्रथम ही वनी है और अगस्त्य मुनि पीछे उत्पन्न हुए हैं, सो ठीक नहीं हो सक्ते तथा वेद विरुद्ध भी इस से सिद्ध हुआ कि, सारामनु भी प्रमाण नहीं है, और सारी स्मृतियों की तो क्या कथा कहानी है अब इन झगडों को छोड फिर हम प्रथम लेख तुम्हारे को अर्थात् नास्तिक का खण्डन आस्तिक का पुराण मंडन के सम्वाद विषय को देखताहूं मनु महाराज का वचन है कि, " नास्तिकोवेदनिन्दकः " अर्थात् जो वद की निंदा करे सो नास्तिक है, अब इन पोप जाल के ब्रह्मवैवर्त्तादिक अष्टादश पुराणों को देखो जो वेद की निन्दा पक्ष में हैं, निम्न लिखित श्लोक ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के हैं ।

भगवन्यत्त्वयापूर्वं ज्ञातंसर्वमभीप्सितम् । सारभू

तंपुराणेषु ब्रह्मवैवर्त्तमुत्तमम् ॥ पुराणोपपुराणा नां वेदानांभ्रमभञ्जनम्। हरिभक्तिप्रदंसर्वं तत्वज्ञान विवर्द्धकम् ॥ कामिनांकामदंचेदं मुमुक्षूणाञ्चमो क्षदं । भक्तिप्रदंवैष्णवानां कल्पवृक्षस्वरूपकम् ॥

अर्थात्– हे ! भगवान जो तू ब्रह्मवैवर्त्त पुराण को पहिले से जानता है, सो चाहने के योग्य है, और पुराणों से उत्तम और सब का सार है, पुराण और उपपुराण और वेदों की भूल मिटाने वाला और हरि की भक्ति देने वाला, और तत्वज्ञान का बढाने हारा, और कामी लोगों के मनोर्थ पूर्ण करने हारा, मोक्ष के खोजियों को मोक्ष देने हारा, और वैष्णवों का मानों कल्प वृक्ष सी भक्ति दिवैया है।

वाहरे वाह ! पोप खूब तैंने कामी लोगों के मनोर्थ पूर्ण करे, क्यों न जब श्रीकृष्ण सरीखे जितेन्द्री को व्यभिचारी बताया तौ औरों की क्या गिन्ती है, बस ऊपर के लेख से कृष्ण की तरह व्यभिचार करे कुछ दोष न होगा परन्तु राज में खबर पड गई तौ, राज दण्ड जरूरही होगा, तथा यह पुराण उपपुराण जिन को पोप मानते हैं, उस से भी पीछे बना है, मित्र ! तूने खूब वेदों की निन्दा की, देखो मनुस्मृति में पराई स्त्रियों से संभोग करने का कैसा दोष है, क्या कृष्ण नहीं जानते थे ? नहीं सब जानते थे, मगर यह तौ स्वार्थी और विषयी लोगों का कुकर्म है, जो इन्हों ने ऐसे योगीश्वर को भी दोष लगाया, और यह ब्रह्मवैवर्त्तादि वही पुराण हैं, जो राजा भोज के समय में बने हैं, और उस ने संजीवनी नाम पुस्तक में लिखा है, विद्वान् लोग आप मान लेंगे कि, पुराण मत नास्तिक है या वेद मत, हम तुम से पूछते हैं कि, राजा रामचन्द्र के वक्त में कौन कौन पुराण थे क्यों कि, तुम्हारे ही अनुकूल पुराण तौ कृष्ण केही वक्त मे व्यासजी ने बनाये हैं. तथा तुम्हारे ही अनुकूल हम तुम से कहते हैं कि, तुम व्यासजी को अवतार मानते हो, और कृष्ण को भी अवतार मानते हो, क्या व्यासजी परमेश्वर को व्यभिचारी चोट्टा वगैरः बतावेंगे, मगर

हम तो कृष्ण को व व्यासजी को व रामचन्द्र को अवतार नहीं मानते, क्यों कि वेदानुकूल सब शास्त्रों में लिखा है जैसे ।

दिव्योह्यमूर्त्तःपुरुषः सवाह्यभ्यन्तरोह्यजः ।

अप्रणोह्यमनाःशुभ्रो ह्यक्षरात्परतःपरः ॥ २ मुण्डके १-२

अर्थ– वह मूर्त्ति वर्जित पुरुष दिव्य है, वह बाहर और भीतर है, अज है, प्राण और मन रहित है, शुद्ध है अक्षर प्रकृति से भी परे है, इति एसे एसे वचन बहुत है, कि परमात्मा को मोह शोक लोभ भय मरना जीवना नहीं है, वह अजर है अमर हैं नित्य है, इत्यादिक ,और तुम्हारे ही अनुकूल तुम से कहता हू कि, तुम व्यासजी को अवतार मानते हो, क्या परमेश्वर को भी मोह शोक अज्ञान होता है, जो वेद पढ कर भी संतुष्ट न हुये, तुम्हारे अनुयाइयों ने लिखा है कि, व्यासजी सरस्वती नदी के तट पर एक वृक्ष के नीचे शोकातुर हो जैसे कोई रोता हो वैसे बैठे थे, उस समय वहां नारद आये और व्यासजी से पूछा कि, आप एसी व्यवस्था में क्यों बैठे हैं, तब व्यासजी बोले कि, मैं ने सब विद्या पढी और सब प्रकार ज्ञान भी मुझ को भया परन्तु मेरे चित्त की शान्ति नहीं हुई, तब नारदजी बोले कि, तुम ने भगवत कथा नहीं की और एसा ग्रन्थ भी कोई नहीं बनाया जिस में भगवत कथा होवे सो आप भागवत बनावें कृष्णजी के गुण युक्त, तब आप का चित्त शुद्ध होगा ।

वाहरे पोप जाल! खूब व्यासजी का श्रीकृष्ण को छली विषयी वगैरः ठहरा कर चित्त शुद्ध कराया, और रासपंचाध्याई बना कर खूब शांति हुई होगी, और खूब शोकातुर अवतार को भी बनाया यह सब बातें वेद से विरुद्ध हैं, और आश्चर्य्य यह है कि, मौके पर भागवत को अष्टादश पुराणों से निराली कहने लग जाते हैं, तथा अपने शास्त्रों को जैनी आदियों से भ्रष्ट हुये बतातें हैं, जैसे कि श्रद्धाराम ने लिखा है, निदान जब भागवत पुराणों की गिन्ती में है तथा श्लोक हैं तो क्यों निकलते हो, यहां फलोरी का लिखा 'धर्म्मरक्षा' में झूठ है, भागवत को देखो १ स्कन्ध ४ अध्याय में ।

इतिभारतमाख्यान्नं कृपयामुनिनाकृतं ।
एवंप्रवृत्तस्यतदा भूतानांश्रेयसिद्विजाः ॥
सर्वात्मकेनापियदा नातुष्यद्हृदयंततः ।
नातिप्रसीदद्हृदयं सरस्वत्यास्तटेशुचौ ॥
वितर्कयन्विविक्तस्थ इदंप्रोवाचधर्मविदि ति १७॥

अर्थात् इस प्रकार से कृपा कर मुनि ने भारत नाम इतिहास वनाया परन्तु हे ब्राह्मणों! यद्यपि वह सव प्रकार से प्राणियों के कल्याण करने में एसा उद्योग करता था तो भी जव उस्के मन में सन्तोष न हुआ तव वह धर्म ज्ञानी जिस का चित्त अति सन्तुष्ट न था सरस्वती के पवित्र तट पर एकांत में वैठा हुआ विचार करता हुआ यह कहने लगा इति।

जैसे ऊपर के झगडे हैं, एसे ही " देवी भागवत " और इस के हैं, श्रीमद्भागवत की टीका कार " श्रीधर " ने लिखा है, यह कोई न जाने भागवत कोई और भी है, इस से मालूम होता है कि, " श्रीधर को भी शङ्का थी " जो हठ करके प्रथम हीं " देवी भागवत " का रगडा डाला एसी एसी मिथ्या कथा वना कर मन्त्र जुदे जुदे रचे " तीर्थ महात्म्यादि " वना पोप जाल वनाया है, खैर हमें इन झगडों से क्या मतलव क्यों कि, " काली भली न खेत " जैसे हीं पुराण तैसे ही भागवत, किसी को वाम मार्गियों ने वनाया किसी को वैष्णवों ने वनाया, किसी को शैवों ने किसी को किसी ने वनाया है, सव वेद विरुद्ध इस से मान ने योग्य नहीं, इन का झगडा चाहे जितना करो कभी न निवटेगा, पद्मपुराण में भी लिखा है कि, पुराणों का झगडा वहुत दिन का है जैसे।

पद्मपुराणे।

व्यामोहायचराचरस्यजगतस्तेतेपुराणागमा
स्तांतामेवहिदेवतांपरात्रिकांजल्पान्तिकल्पावधि
सिद्धान्तेपुनरेकएवभगवान्विष्णुस्तमस्तागमा

व्यापारेषुविवेचनंव्यतिकरांनित्येषुनिश्चीयते ॥

अर्थात्– सब लोगों को भ्रम उत्पन्न करने के लिये यह सब पुराण और शास्त्र रचे गये हैं, जिन में अपने अपने देवो को श्रेष्ठ और दूसरों को नष्ट ठ हराया है जो इन पुराणों का झगडा कल्प भर भी किया जाय तौभी न निवटे इस लिये विचार करने से यही निश्चय होता है कि, सब का सिद्धान्त मूल सर्व व्यापक एक परमेश्वर ही है, जब परमेश्वर का अवतार हुआ फिर वह मर गया क्या परमेश्वर मर गया ? नहीं नहीं ऐसी ऐसी मिथ्या कथा नास्तिकपने की भर रक्खी है, जिस में निश्चय होता है कि, पुराण मत भी एक तरह का नास्तिक मत है जो परमेश्वर को छोड़ जड पदार्थों की पूजा करते हैं, तथा आपही ब्रह्म बन बैठे इत्यादिक ।

और सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का खण्डन किया सो भी अयुक्त है क्यों कि, उक्त पत्रों का अभिप्राय यह है कि, वेद को स्त्री शूद्र न पढें तथा ब्राह्मण पुस्तक वेद ही है, और तुमने सब मतों का खंडन क्यों करा, सो इन विषयों का उत्तर तो श्रीस्वामीजी महाराज ने वेदों के प्रमाण पहलेही दे दिया है पर यह हठ अधर्म्मी भोजनभट्ट कब छोडते हैं, पर मैं भी इतना लिखता हूं कि, वेद सब के पिता परमेश्वर का धन है एक अकेले द्विज ही का नहीं है किन्तु सब का है, और धर्म्म अर्थ काम मोक्ष की सब के प्रति प्रेरणा है, तो फिर स्त्री शूद्र क्यों न पढें ।

और दूसरे ब्राह्मण पुस्तक वेद की व्याख्या ही है क्यों कि, यजुर्वेद में " तस्माद्यज्ञा० " इस मन्त्र से केवल चारों वेदों की उत्पत्ति है, और ब्राह्मण पुस्तकों की नहीं तीसरे खण्डन विषय में सो ठीक है, जो वेद विरुद्ध है उस का खण्डन ही करना चाहिये । नास्तिकों का परास्त ही होना अच्छा है, इत्यादिक निदान आप की सब बातों का उत्तर पूरा हुआ जो प्राणी अपनी मोक्ष चाहे तो वेद ही मत का ग्रहण करे " सत्यमेवजयतेनानृतम् " ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः ! ।

लेख ग्रन्थ कर्त्ता का ।

प्रथम दिन तो यह व्याख्यान हुआ सब महाशय अपने अपने घर चले

गये दूसरे दिन फिर व्याख्यान शुरू हुआ इति।

लेक्चर सभा पति का।

कल दिन तो मानों इन्द्र की सभा का सा जलसा था, मैं आज वही चाहता हूं कि, सब विद्वान् मिल कर पक्षपात छोड कर सत्यासत्य का निर्णय करें और यह मुझे भी निश्चय हो गया है कि, सब मतों में वेद मत उत्तम है धन्य है उस सर्व शक्तिमान् परमेश्वर को कि जो यहां के मनुष्य सत्यासत्य का निर्णय कर सक्ते हैं इति।

इस पर जैनी पंडित बोला (नास्तिक) हमारे यहां के पांडेजी ने "प्रश्नमालिका" नाम की पुस्तक बनाई है, जिस्में ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का खण्डन होवे इस अभिप्राय से प्रश्न किये हैं, सो क्या ठीक नहीं है।

आस्तिक— मित्र! जैनियों ने तो प्रथम ही मूर्त्ति पूजा इस देश में वेद से विरुद्ध चलाई थी, क्यों न आप लोग वेद का खण्डन करें! कोई समय एसा था कि, सारे इस आर्य्यावर्त्त देश में वेद ध्वनि होती थी पीछे आप लोगों के प्रताप से वेद ध्वनि मिटी और उस के बदले वेद से विरुद्ध मूर्त्ति पूजा अर्थात् जड पदार्थ की पूजा चली, फिर कुछ इस भारत देश का उदय हुआ शङ्कर स्वामी ने नास्तिकों का खण्डन कर वेद ध्वनि का प्रचार किया परन्तु कहां तक स्वार्थियों ने तुम्हारी दखल देखा अर्थात् वैष्णवों (चक्रांतियों) ने झांझ कूट कूट ढोल बजा बजा लोगों को लूटना शुरू किया पर अब श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वतीजी की विद्या के बल से फिर पोप मत का खण्डन होता जाता है, और तुम्हारी तो वह बात है कि, "सूप बोले तो बोले क्या छलनी भी बोले जिस में ७२ सौ छेक"।

नास्तिक— हमारे यहां कोई बात असत्य नहीं है जो असत्य होतो कहो

आस्तिक— जरा अपने ग्रंथों को तो देखो जिन में जनी लोग ऋषभदेव स्वामी का कद पांच सो धनुष अर्थात् दो हजार हाथ लंबा और उमर चौरासी लक्ष पूर्व अर्थात् ५९२७०४०००००००००००००. वर्ष की बत-

लाते हैं, यह गपोडे नहीं हैं तो क्या हैं! देखो वेद में भी यही लिखा है,

'शतंजीवशरदोवर्द्धमानःशतंहेमन्ताच्छतमुतवसन्तात्' अर्थात् सो जाडों तक जी सकूं, तथा मनु में भी देखो 'अरोगःसर्वसिद्धार्थश्चतुर्वर्षशतायुषः कृते त्रेतादिषुह्येषामायुर्ह्रसतिपादशः' तथा कठोपनिषद में भी 'यमनचिकेता' से यही कहता है, सो जैनी का अभिप्राय वेद विरुद्ध है सो क्यों न हो ठीक तो है, बौद्ध और जैनियों की पुस्तक मिलाने से और पुराने मंदिर और मूर्त्ति के देखने से इस बात में कुछ भी सन्देह बाकी नहीं रहता कि, किसी समय में यह दोनों मत एक थे थोडे दिनों से भेद पडा है, इस बात को एक पुरुषार्थी मनुष्य ने सिद्ध किया है जैसे 'श्रविर और अर्हत' का अर्थ जन और बुद्ध दोनों एकही मानते हैं।

नास्तिक- तुम्हारे भी तो राजा दशरथ की बडी उम्र बताते हैं।

आस्तिक- जैसे तुम वैसे ही पुराणी, वेद में निकाल दो, जो सब विद्या का कोश है. कपोल कल्पित ग्रंथ मान ने लायक नहीं होते। निदान तुम्हारे शास्त्रों में ऐसा पक्षपात है कि, हर एक में नहीं एक कल्पद्रुम कलि का ग्रंथ है जिस में नये फकीर हुये के वास्ते ठहरने के लिये ग्राम में यह नसीहत की है कि, तू एसी जगह ठहरियो जैसे 'यस्मिन्ग्रामेजैनानांकुलम्भवति, सिद्धाःश्राद्धाश्चप्रचुराभवंति' अर्थात् जहां जैन और सरावगीहों वहां ठहरना इस से क्या आया कि, जो जैन से विरुद्ध हैं सो हमारे काम के नहीं एसे ही चक्रांतियों में जो तप्त मुद्रा लगा ले वह 'समआस्ते' अर्थात् भले प्रकार के आस्ते और वही सम्प्रदाई अन्य असम्प्रदाई अर्थात् बुरे प्रकार के आस्ते, वाहरे पक्षपाती! अपने से अन्य को भ्रष्ट जानना जो लम्बा तिलक लगावे वह अच्छा जो आडा तिलक लगावे वह भ्रष्ट वाहरे तिलकिया धर्म क्यों न तू प्रबल हो! वह उस को बुरा जाने वह उस को बुरा जाने, किसी ने कान फाडे किसी ने सुन्नत करी, किसी ने वदन जलाया किसी ने कुछ किया किसी ने कुछ किया, विशेष इस का हाल विषय पर कहा जावेगा। परंतु ये सब के सबही वेद विरुद्ध हैं निदान नास्तिक मत वाले परमेश्वर को सृष्टि कर्त्ता भी तो नहीं मानते। इन से तो ईसाई अच्छे जो सारी तौरेत में सृष्टि का कर्त्ता जगदीश्वर माना है और मूर्त्ति

पूजा अर्थात् जड पदार्थ की पूजा भी नहीं करते देखो वेद में सृष्टि कर्त्ता ईश्वर है कहो तो प्रमाण कहूं।

नास्तिक– हम वेद को नहीं मानते तुम क्यों प्रमाण देते हो।

आस्तिक– वेद को नहीं मानते तौ खैर युक्ति और बुद्धि को तो मानों, जरा हठ धर्म्म को छोडो, देखो संसार में इत नी वस्तु हैं कोई किसी के बनाये विना नहीं बन सक्ती जैसे १ मटका है तौ मटके में यह सामर्थ्य नहीं है कि, वह आप ही बन जावे उस को कुम्हार बनावेगा तब हीं वह मटका बनेगा इसी तरह कोई कार्य्य हो विना बनाये नहीं बनता तौ इस से प्रगट है कि, संसार का भी कोई बनाने वाला जरूर होगा।

नास्तिक– यहां तुमने अनुमान हीं प्रमाण माना।

आस्तिक– विना अनुमान प्रमाण मानें तुम्हारे सारे ग्रंथ भ्रष्ट हो जायेंगे क्यों कि, उन ग्रंथों का क्या इतबार है मालूम नहीं किस ने बनाये हैं तुम कहोगे कि, उस में नाम बनाने वाले का लिखा हुआ है। तो हम कहेंगे क्या तुम्हारे सामने बनाने वाले ने लिखा है। तब तुम यही कहोगे कि, हम तो लिखे से जानते हैं तब भी तुम को अनुमान ही प्रमाण करना पडा एसे ही सारी वस्तु का सिरजन हार एक ईश्वर है और तुम्हारे पांडेजी की पण्डिताई तो इतनी है कि, 'आर्य्य समाज' को भ्रम से 'आर्य्या समाज' लिखा है, जो 'आर्य्य' और 'आर्य्या' का भेद तक न जाना, और 'प्रश्नमालिका' के प्रश्न तो एसे हैं जिन का उत्तर उसी 'ऋग्वेद भाष्य भूमिका' में दे रक्खे हैं, जिन को बुद्धिवान् लडका भी समझ सके, आप के प्रश्नो का सार यह है। कि वेद ईश्वर ने नहीं बनाये तथा तुम भी मूर्त्ति पूजा करते हो, जैसे तुम्हारे सामने तुम्हारे बडों की 'फोटोग्राफ' अर्थात् तस्वीर को मिटावे तो तुम को बुरा लगेगा या नहीं, उस का उत्तर प्रथम यह है कि, वेद ईश्वर ने बनाये क्यों कि सृष्टि की आदि में विना परमेश्वर के दिये ज्ञान किसी को नहीं आता, इस वास्ते वह ज्ञान ईश्वर कृत है। सोई ४ ऋषियों के द्वारा प्रगट हुआ वही वेद है, इस से ईश्वर कृत है। दूसरे 'चित्रों' के मिटाने से 'दीवार' की शोभा जायगी म-

कान की सजावट जायगी । और हम उस तस्वीर को परमेश्वर करके नहीं मानते हैं, न उस को धूप देते हैं न उस के आगे खाने को रखते हैं न ढोल घण्टा बजाते हैं । तुम तो इस से विरुद्ध धूप देते हो क्या पत्थर सूँघ सक्ता है ? क्या पत्थर या पीतल रथ में बैठने से खुश होता है ? और तुम तो पाषाण पीतल की मूर्त्ति को ईश्वर समझते हो । हे महाशयों ! जो सत्य मत ग्रहण करे तो वेद ही है इस में किसी का पक्षपात नहीं है ।

नास्तिक– तुम्हारे वेद मत में ' अग्निहोत्र ' करने में हिंसा है, जैसे कि, ' सर्वदर्शन संग्रह ' में लिखा हुआ है ।

आस्तिक– वेद में हिंसा का नाम भी नहीं, बल्के हिंसा करने की बुराई है । और ' अग्निहोत्र ' करने से संसार का उपकार होता है, अर्थात् वर्षा होती है नाज उत्पन्न होता है जीव पलते हैं । इस में ' गीता के व मनु के ' वचन हैं, परंतु आप तो यही देखिये कि, ' अग्निहोत्र ' होने से वायु शुद्ध होगी मकान में खुशबू होगी । और इस के धुओं से ' मेह ' वर्षेगा इत्यादि सो आप भी वेद मत को ही अङ्गीकार करो इति ।

लेख ग्रन्थ कर्त्ता का ।

दूसरे दिन का व्याख्यान पूरा हुआ सब प्रिय जन अपने अपने स्थान को सिधारे तीसरे दिन फिर व्याख्यान शुरू हुआ ।

लेक्चर सभा पति का ।

मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि, हे परमेश्वर ! तू अपनी सत्य विद्या जो वेद है सब के मन में दे और सब महाशय उसी पर चलें ।

पीछे कलियुग के पंथी अर्थात् ' कबीरपंथी, नानकशाही, दादूरामी, गरीबदासी, चरणदासी, रामसनेही, ' इत्यादिक एक संमति हो कर बोले ।

वेद विरोधी– हमारे यहां मूर्त्ति का पूजन नहीं होता है हम तो वेदानुकूल हैं ।

वेद मतानुयायी– नहीं क्यों ! देखो ' नानक ' के यहां ग्रंथ साहब की ऐसी पूजा होती है कि काष्टादि प्रतिमा से बढ कर ' ढोल ढमाके ' बजाते हैं । और ' कबीर ' ने ऐसे भजन वेद विरुद्ध बनाये हैं कि, जिन का

वारापार नहीं जैसे १ मिसाल लिखता हूं।

तनी जुलाहा बुनी जुलाहा और जुलाहा किनी।
पांचो कपडे वाहर किनी धोती में सुचि लिनी॥

इस ने वर्णाश्रम के धर्म्म आचार को एसा भ्रष्ट किया है यह नहीं सोचा कि वाजार के कपडे सव लोगों से मिल जाते हैं अगर उनको रसोई खाती दफे रख दिये जावें तो क्या हानी है वस्त्रों से गर्मी लगती है तौ भोजन कम हो इस वास्ते तथा जाडे में कहो तो यह उत्तर है कि, रसोई में चावल कढी इत्यादिक होते हैं, वह वस्त्रों पर पड जायें तो वह वस्त्र वाजार में पहनने लायक नहीं रहेंगे। और मक्खी आदि भी चिपटेगी रसोई में वहुत वस्त्रों का ध्यान भी न रहेगा, इस वास्ते १ धोती और अगोछा चाहिये। और २ मत वालों ने भी एसाही मत चलाया है जैसे रामसनेही, चरन दासियों, ने राम राम जपने से ही मोक्ष मानी है यूं चाहे जितना कोई कर्म करो सो भी वेद विरुद्ध है, वेद में लिखा है 'ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः' सो ठीक है, अर्थात् जैसा परमेश्वर है उस को वैसा ही जानना और यह नहीं जानना कि परमेश्वर का अवतार हुआ जैसे रामचर्ण, रामसनेही, कहता है

राम नाम लिख पत्थर तरई, भगति काज औतारहि धरहि।

यह ज्ञान से विरुद्ध है तथा वेद विरुद्ध है, और 'वाल्मीकि' ने भी लिखा है।

अत्रपूर्वमहादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।
सेतुवन्धइतिविख्यातः॥

अर्थ– कहा था कि हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल हो कर घूमते थे, और इसी स्थान में चतुर्मास वास किया था, और परमेश्वर की उपासना, ध्यान, भी करते थे, वही जो सर्वत्र विश्वव्यापक देवों का देव महादेव परमात्मा है, उसी की कृपा से हम को सव सामिग्री यहां प्राप्त हुई और देखो यह सेतु हमने वांध कर लङ्का में जा के उस रावण को मार तुम को ले आये। अव विचारने की जगह है कि, उस

' रामचन्द्र ' ने आप अपने को ईश्वर का भक्त ठहराया है, तथा उस की व्याकुलता से भी जीव ही ठहरता है । व्याकुलता २ परमेश्वर को नहीं होती सो अवतार मानना भूल है, तथा ' राम नाम ' से पत्थर तिर गये थे तो अब रोडे ही तिरने चाहिये, सो नहीं तिरते । भाइयो ! जो ज्ञान से विरुद्ध बात होगी सो कभी पूरी नहीं पटेगी ।

वेद विरोधी– अच्छा ' वाल्मीकि रामायण ' तो तुम सारी मानते हो

वेद मतानुयायी– हम वेद से विरुद्ध किसी को भी नहीं मानते भला यह ' रामायण ' की बात कब सच्ची होगी कि, ' रावण ' के डर से अग्नि नहीं जलती थी, ' रावण ' के डर से सूर्य्य नहीं तप्ता और ' रावण ' के डर से पवन नहीं चलती, इत्यादिक भला जब पवन नहीं चलती होगी तो जीवन चरित्र कैसे होता होगा, और जब अग्नि नहीं जलती होगी तो पेट कैसे भरता होगा, जब सूर्य्य नहीं तप्ता होगा तो कैसे पृथ्वी में से वस्तु पैदा होती होंगी इत्यादि । एसे २ गपोडे वेदानुकूल नहीं हैं देखो वेदों के ' उपनिषदों ' में यही लिखा है कि, परमेश्वर के भय से सूर्य्य तप्ता है अग्नि जलती है और पवन चलती है इत्यादि । निदान यह जितने मत हुये हैं सब करीब करीब अर्थात् २०० वर्ष के लगभग हुये हैं जिस को मत प्रकाश में देखो सो कब वेदानुकूल हो सक्ते हैं क्यों कि जो वेदानुकूल होते तो वे पुरुष नया मत कभी स्थापन नहीं करते और न कभी कर्म्म काण्ड का खण्डन करते जैसे ' रामचर्णादिकों ' ने खण्डन किया हैं ।

वेद विरोधी– हमारा नया मत क्या है ।

वेद मतानुयायी– देखो कोई तो पीली चादर ओढता है कोई हिरमिच में, कोई शाहमंजनी में, रंग ओढता है, कोई बाल नहीं बढाता, कोई सारे बाल बढाता है कोई कहता है ' वाह गुरू दि फत्ते ' कोई कहता है ' राम राम ' कोई कहता है ' सत साहब ' कोई कुछ और कोई कुछ यही भेद का होना वेद विरुद्ध हैं और नया पन्थ चलाना इसी बात का नाम है जो दूसरा देख के उसी वक्त पहचान ले कि यह फलाने धर्म्म का मनुष्य है । वाहरे चिन्ह वाले धर्म्म !

वेद विरोधी– तुम्हारे मत के भी तो श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वतीजी अभी हुये हैं और नया नाम 'आर्य्य समाज' रक्खा है तथा आपस में 'नमस्ते' कहते हो क्या यह नया मत नहीं है?

वेद मतानुयायी– पक्षपात को छोड देखो आर्य्य नाम है श्रेष्ठ का और 'समाज' नाम है एकत्र हुये का यह वेद विरुद्ध नहीं है और कुछ श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती का यह मत नहीं है वेद मत सनातन प्राचीन है तुम ने विद्या नहीं पढी जिस से तुम श्रीस्वामी दयानन्दजी सरस्वती का मत कहते हो मित्र वेद मत! पुराने पुराने ग्रंथों में पाया जाता है मगर श्रीस्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने दबी हुई 'आंच' को राख में से निकाला और नमस्ते का कहना सो भी वेदानुकूल है देखो 'यजुर्वेद' में 'नमस्तेरुद्रमन्यवे' इत्यादिक बहुत जगह हैं सो भी वेदानुकूल हैं मगर तुम कहो राम राम, सत्य साहेब, वाह गुरू दि फत्ते, इत्यादि कोन से वेद का वचन है और तुम्हारे अनुकूल राम का नाम तुम अवतार होने से मानते हो, सो जब राम का अवतार नहीं भया था तब किस का नाम लेते होगे अब यही आप से कहना है कि जो तुम से बन पडे तो वेदही पढो और ग्रहस्तियों के प्रति वर्णाश्रम के धर्म्म पालने का उपदेश करो कि, प्रथम ब्रह्मचर्य्य से विद्या पढो पीछे अवस्था के अनुसार ग्रहस्त करो, पीछे वाणप्रस्थ करके सन्यास लो जो मोक्ष चाहते हो और तुम भी एसा मत करो कि जिस जात का मनुष्य हो सिर मुँडा खडिया का लम्बा तिलक लगा बाबाजी कहाने लगे तथा मिस्सी सुर्म्मा लगा छल्ले पहन तेल डाल गोटे की टोपी पहन व्यभिचारियों का ढङ्ग बना गुशाईं जी बजने लगे। जो मोक्ष चाहो तो वेद मत ही का ग्रहण करो इति।

लेख ग्रन्थ कर्त्ता का।

तीसरे दिन का व्याख्यान पूरा हुआ सब प्रिय वर अपने अपने घर को गये। चोथे दिन का व्याख्यान शुरू हुआ।

लेक्चर सभा पति का।

परमेश्वर की कृपा से ३रे दिन से सत्यासत्य का निर्णय जच्छी तरह हो

ता है मगर आज कल हमारे देश वालों को पादरी लोग एसा कहते हैं. कि, जो कोई मोक्ष चाहे तो 'ईसा' पर विश्वास लाये जो परमेश्वर है क्या यह वात सच्च है पर मैं इतना जरूर जानता हूं कि, वेद मत पुराना है और सव नये हैं इति । इस पर ईसाई मत वाले वोले ।

जेम्स– विना ईसा पर विश्वास लाये 'अंजील' पर चले किसी की मोक्ष न होगी ।

आर्य्य– तुम्हारी अंजील को वने करीव १९००. वर्ष हुये हैं पहले कहांथी, दूसरे अंजील यूह० प० १४ अ० २८ में लिखा हुआ है, जैसेः– 'क्यों कि मेरा पिता मुझ से वडा है' इस से आप का खुदा परमेश्वर नहीं ठहर सक्ता तथा 'वाइविल' में परस्पर विरोध भी है । एक जगह तो क्रोध करने का अभिप्राय है जैसे ।

मार्क० प० ३० आ० ५. तव उस ने मन की कठोरता के कारण शोकित हो कर क्रोध से चारों ओर उन पर देखा और उस मनुष्य से कहा 'अपना हाथ वढा' ।

दूसरी जगह इस से विरुद्ध लिखा है कि, क्रोध नहीं करना अच्छा है ।

उप० प० ७ आ० ९ मन में शीघ्र कोपित मत हो क्यों कि मूर्खों के मन में क्रोध वसता है ।

जेम्स– अंजील से पहले 'तौरेत' थी, और तुम्हारे मत के खंडन में 'सत्य मत निरूपण' वनाया है क्या गलत है ।

आर्य्य– तौरेत को भी वहुत दिन वने नहीं हुये है जिस का खुलासा 'तहकीकुलइलहाम' में लाला राम नाथ ने लिखा है, जिस का देवनागरी तर्जुमा 'सत्य मत परीक्षा' है देखो । और 'सत्य मत निरूपण' में पादरी साहव ने 'पुराणियों को, वाम मार्गियों को' सव को मिला वेद मत का नाम वदनाम किया है, सो कव हो सक्ता है । जो पादरी साहव पढे हुये होते तो 'पुराणियों को, वाम मार्गियों को, तथा भक्तमाल डोम के वनाये हुये को' वेद के साथ शामिल न करते । और इस का भी जवाव 'पण्डित लेखराज' ने सच्चे धर्म्म की 'शहादत नामा, पुस्तक में दे

दिया है सो गोर करें । और पादरी साहब जरा अपने 'गरेवान्' में मुँह डाल कर देखें कि, हमारे यहां क्या क्या लिखा है आप सब महाशयों के आगे १. २. लेख तौरेत के प्रगट करता हूं और इन के खुदा आदिल को दिखाता हूं ।

तौ० बा० १० आ० २७, में देखो कैसा खुदा दूत पना करे है, लेकिन खुदावन्द ने 'फरऊन्' के दिल को सख्त कर दिया उस ने उन का (मूसेका) जाना नहीं चाहा । सिद्धांत यह है कि, पहिले तो खुदा ने 'फरऊन्' के दिल में 'मूसे' के जाने को रोका फिर आप ही 'मूसे' को बहकाता है । अरे वाहरे खुदा !

तौ० बा० १२ आ० १. और खुदावन्द ने 'मूसे' से कहा कि, मैं 'फरऊन् और मिसरियों' पर एक बला और लाऊंगा, उस के बाद वह तुम्हें यहां से जानि देगा । एसी एसी बातें १ जगह क्या कई जगह लिखी हैं फिर देखो 'मूसा' झूट भी बोलता था ।

तौ० बा० १० आ० २९. फरऊन् मूसे से कहता है ।

जिस दिन तू मेरा मुंह देखेगा तू मरजायगा, तब मूसे ने कहा कि तू ने अच्छा कहा मैं फिर तेरा मुंह न देखूंगा ।

अब मूसा मुंह देखता है तौ० बा० १२ आ० ३१. ।

तब उस ने अर्थात् 'फरऊन्' मूसे और हारूं को रात ही को बुलाया और कहा कि उठ और मेरे लोगों में से निकल जाओ पीछे वह गये, जब फरऊन् ने बुलाया और कहा क्या, मुंह न दिखाया होगा ? इस से विदित है कि मोक्ष का देने हारा वेद मत ही है जो विकार शून्य है ।

हे सर्व शक्तिमान् ईश्वर ! तू सब के मन में वेद मत ही के धारण करने की प्रेरणा कर क्यों कि बाइबिल तौरेत मनुष्यों की बनाई हुई है, और वेद तेरा बनाया हुआ है ।

लेख ग्रन्थ कर्त्ता का ।

चौथे दिन का व्याख्यान भी पूरा हुआ सब महाशय अपने अपने घर को चले गये । पांचवें दिन का व्याख्यान शुरू हुआ ।

लेक्चर सभा पति का ।

मेरे ऊपर परमेश्वर की वडी कृपा है जो मुझ सरीखे तुच्छ वुद्धि वाले जीव का मन इस सत्यासत्य के निर्णय में लग रहा है और विद्वानों के प्रति प्रार्थना है कि, मुझे १ और सन्देह वाकी है कि, भला अङ्गरेज लोग तो अव मनादी करते हैं, और पहिले तो मुसल्मानों हीं ने जवर-दस्ती सेकडों गांव के गांव मुसल्मान कर दिये थे, क्यों कि, कुरान शरीफ तथा इन का खुदा तो आदिल होगा । इस पर मुसल्मानों के मोलवी साहव वोले ।

यवन– हिन्दुओं * की जो ' वुत्परस्ती ' है सो खुदा से पीठ दिखाने की है, और कुरान ही सत्य है ।

आर्य्य– वुत परस्ती हिन्दू लोग करते हैं वेद के मानने वाले 'आर्य्य' कभी प्रतिमा पूजा अर्थात् काष्ट, धातु, पाषाणादि की नहीं करेंगे, क्यों कि वेद में मूर्त्ति पूजा का निषेध ही है, और स्वार्थियों ने यह अपने कमाने के लिये राह निकाली भी सो वेद विरुद्ध ही है, और कुरान में कोई वात पक्षपात रहित हो तो, वेदही की होगी, क्यों कि, प्रथम तो कुरान को १३००. ही वर्ष वने हुए इससे पहिले वेद ही था, दूसरे खुदा के नजदीक कोई मतवाला हो सव वरावर हैं, पर कुरान में यह वात नहीं वल्के इस से विरुद्ध है जैसे ' सुरहउलनसां जो कि छटा सुपेरा है उस की ।

१३९ वीं आयत में लिखा है ।

वे जो पकडते हैं काफरों को रफीक इस्लाम छोड कर क्या ढूंढते हैं, उन के पास इज्जत ।

---

* हिन्दू शब्द बुरा जान कर मुसल्मानों ने हमारे लिये रक्खा है, हाय ! हमारे वेद विरुद्ध आचरणों से जो अन्य देश के रहने वाले हमारे देश वासियों को काफर, वे-ईमान, गुलाम कहते हैं कारण यह है कि, यहां के लोग वेद विरुद्ध मूर्त्ति पूजा करते हैं, और वेद में यह ही लिखा है, ' नतस्यप्रतिमाअस्ति ' अर्थात् उस की मूर्त्ति नहीं है तो क्यों मूर्त्ति वना पूजा करते हैं और काफिर कहलाते हैं ।

भला यह पक्षपात की बात नहीं है तो क्या है ?

यवन– तुम हमारे ही कुरानशरीफ की क्यों मिसाल देते हो।

आर्य्य– वाह साहब वाह ! खूब बात कही जो, हम अपने शास्त्र की बात कहेंगे तो तुम कहोगे कि हम नहीं मानते, और जो हम तुम्हारे ही शास्त्रों की व्यवस्था दें तो तुम सच्ची बात को सुन बुरा मानते हो, यह इन्साफ की बात नहीं है, और हम को तो लाजिम है, कि, जो जिस मत का मानने वाला हो उसी में उस को समझावें नहीं तो कैसे समझेगा, मिसाल 'अङ्गरेजी बोली वाले को अङ्गरेजी में हीं सवाल का जवाब देने से सवाल करने वाले की तसल्ली होगी, और जो हमने अरबी में अथवा मरहटी में जवाब दिया तो वह क्या समझेगा' आप बुरा न मानिये मगर सच्ची बात आधी लडाई नहीं पर सारी लडाई है।

यवन– अच्छा तो कहो।

आर्य्य– फिर १४४. वीं आयत देखो क्या लिख रक्खा है:–

ऐ ईमान वालो न पकडो मुनकिरों को रफीक मुसलमानों को छोड के क्या लिया चाहते हो अल्लाह का इलजाम सरहीं ?

क्या खुदा के नजदीक आर्य्यों से मुसल्मान अच्छे हैं, क्या यह पक्षपात नहीं है तो क्या है? एसे ही लेखों से विदित होता है कि, यह किसी मनुष्य का बनाया हुआ है, क्यों कि जीव में हीं पक्षपात होता है और देखो इन के यहां अपने मजहब में मिलाने के वास्ते लडाई करना लिखा है, जैसे 'सुरहउल्मायदह की ३९ वीं आयत' :–

ऐ ईमान वालो डरते रहो अल्लाह से और ढूंढो उस तक वसीला और लडाई करो उस की राह में शायद तुम्हारा भला हो।

इस में देखो प्रथम तो जो इन के मजहब वाले सो तो ईमान वाले, बाकी बे-ईमान दूसरे अपने मत में मिलाने को लडाई करो। तीसरे जब खुदा का कलाम भी शायद पक्का नहीं तो क्या कोई और करेगा? यह कैसा खुदा का कलाम एसे एसे लेखों से साफ जाहिर है कि मनुष्य कृत है, और पक्षपात है तथा महम्मद साहब की कार-रवाई को देखो जिस को मुसल्मान साहब

कासद खुदा का कहते हैं, क्या क्या अनरीत करते हैं कि अपने मुतवन्ने बेटे जैद की जोरू 'जीनव' का खूब सूरत रङ्ग देख दिल चलायमान होता है, तथा झूँठ भी बोलते हैं कि, एक दफे अपनी लौंडियों से हमबिस्तर होने की कसम खाई मगर बाज न रह सके। वाहरे जितेन्द्री वाह!

यवन– तुम्हारे भी तो कृष्ण ने रास विलास किया है, और तुम उस को परमेश्वर मानते हो।

आर्य्य– कृष्ण ने कोई बात अनरीति की नहीं करी है, क्यों कि वर्णाश्रम के धर्म 'गीता' आदि में हैं और जिन्हों ने उनका नाम बदनाम किया है, वह भी आपही सरीके होंगे, और रास लीला कृष्ण लीला सब विषयी लोगों ने घडी हैं, दूसरे हम उस को परमेश्वर नहीं मानते क्यों कि, कृष्णचन्द्र मर जाने पर क्या ईश्वर मर थोडेही गया है, ईश्वर तो सर्व व्यापक है, और न्यायकारी है, निदान फकत हमारा वेद मत ही ईश्वर की तरफ से है, जिस में पक्षपात बिल्कुल नहीं है। – ओ३म् शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!।

लेख ग्रन्थ कर्त्ता का।

पांचवें दिन का भी ब्याख्यान पूरा हुआ सब प्रियवर अपने अपने स्थान को गये। छठे दिन का ब्याख्यान शुरू हुआ।

लेकर सभा पति का।

उस परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूं जिस ने सारे सन्सार को बनाया और मनुष्य को एसी बुद्धि दी जो सत्यासत्य के खोज करने में प्रवृत्त हो रहा है, क्यों कि 'हितोपदेश' का श्लोक है कि जिस का यह अर्थ है, भोजन करना, सोना, डरना, मैथुन करना, यह चारो वस्तु पशु कहिये (ढोर) में और मनुष्य में बराबर हैं, लेकिन धर्म्म केवल मनुष्य में हीं जादा है, सो अब मुझ को कुछ सन्देह बाकी नहीं रहा और सब तरह से तृप्ति हो गई परंतु अब पण्डित जनों से प्रार्थना है कि, जीव के प्रति शास्त्र की क्या प्रेरणा है, अर्थात् जीव का किस में भला है सो कहिये? मेरा मन आप के कथन सुन कर संतुष्ट नहीं होता इति। इस पर पक्षपात रहित पण्डित बोला।

पण्डित— नामुत्रहिसहायार्थं पितामाताचतिष्ठति।
नपुत्रदारान्नज्ञाति धर्मस्तिष्ठतिकेवलः॥

अर्थात्— पिता माता पुत्र भार्य्या बन्धु ये सब परलोक में सहाय के लिये नहीं रहते, केवल धर्म हि रहता है।

जिज्ञासु— धर्म्म क्या किसी को पुन्य करके देने का नाम है?

पण्डित— धर्म्म वही है, जो सत्शास्त्रों में वर्णाश्रम के अनुकूल धारण करने लिखे हैं, जैसे पतंजलिसूत्र में लिखा है:— 'अहिन्सासत्यास्तेपब्रह्मचर्य्यापरिग्रहायमाः' अर्थात् अहिन्सा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य्या, अपरिग्रह यह पांच यम हैं, किसी जीव को मन, वाणी, शरीर सें, दुःख न देने का नाम अहिन्सा है, मन, वाणी से यथार्थ बोलने का नाम सत्य है, चोरी छोडने का नाम अस्तेय है, भोगों के साधनों को न अङ्गीकार करने का नाम (खोटे व्यसनों में से) अपरिग्रह है, और इन्द्रियों को रोकने अर्थात् वृत्तियों को रोकने का नाम ब्रह्मचर्य्य है इति।

जिज्ञासु— वह धर्म्म क्यों कर सीखे।

पण्डित— तस्माद्धर्मसहायार्थं नित्यंसञ्चिनुयाच्छनैः।
धर्मेणहिसहायेन तमस्तरतिदुस्तरम्॥

अर्थात्— धर्म्म के सहाय के अर्थ नित्य ही धीरे धीरे, धर्म्म का संचय करे, धर्म की सहायता से दुस्तर नर्क को तारता है, जब तुम धर्म का सेवन करोगे तो फिर वह भी तुम्हारी रक्षा करेगा, क्यों कि एक धर्म हि वस्तु इस जीव के वास्ते संसार में है, और भाई अधर्म करना भी तुम्हारे ही हाथ है, परन्तु अधर्म दुःख का मूल है, जैसे अन्न दान देने से लेने वाले की प्रसन्नता होगी तो आखीर में भी अच्छा होगा, और कोई किसी को जीव से मारे वह जीव तडफ तडफ कर भागे तो दुःख से भागे और रँभावे है, इस से विदित होता है कि, आखिर में दुःख होगा। बस धर्म्माधर्म्म की तो १ छोटी सी मिसाल दी और धर्म्म की रक्षा करना अपनेही हाथ है।

धर्मएवंहतोहंति धर्म्मोरक्षतिरक्षतः ।
तस्माद्धर्मोनहन्तव्यो मानोधर्म्मोहितीवधीत् ॥

अर्थात्– मारा गया धर्म्म मरता है, रक्षा किया गया धर्म्म रक्षा करता है, मारा गया धर्म्म हम को न मारे इस लिये धर्म्म को न मारना, एसा ही महाभारत के वन पर्व में अ० ३१२ के श्लोक १२६ वें में है ।

धर्म्मएवहतोहन्ती धर्म्मोरक्षतिरक्षतः ।
तस्माद्धर्म्मनत्याज्य मानोधर्म्मोह्यतोवधीत् ॥

पोपजी– महाभारत तो सारी मनु के अनुकूल होगी, जो तुमने मनु के साथ साक्षी दी ।

पण्डित– मित्र ! इस में भी वहुत गोलमाल कर दिया है, वहुतेरे श्लोक तथा अध्याय के अध्याय वना के डाल दिये हैं, तथा सारी भारत मनु के अनुकूल तो जव होवे जव मनु का ही दूसरी भाषा में महाभारत तरजुमा होवे ।

निदान मनुष्य यह न सोचे कि, हम को पाप करते कौन देखता है, नहीं वह परमात्मा देखता है जैसेः– ' मन्यतेवैपापकृतो नकश्चत्पश्यतीतिनः तांस्तुदेवाःप्रपश्यति स्वस्यैवान्तरपूरुषः । ' अर्थात् पाप करने वाले यह मानते हैं कि, हम को कोई नहीं देखता परन्तु उस पाप को देवता और अपने भीतर रहने वाला (पुरुष) देखता है, इस वास्ते धर्म्म को छोड कोई कार्य्य नहीं करना क्यों कि, लिखा है ।

मृतंशरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ ।
विमुखावांधवायांति धर्म्मस्तमनुगच्छति ॥

अर्थात्– काष्ठ और मृतिका की सदृश मृतक शरीर को पृथिवी में त्याग करके वांधव लोग विमुख होते हैं, धर्म्म उस के पीछे चला जाताहै ।

जिज्ञासु– धर्म्म क्यों कर मिले ?

पण्डित– देखोः–

अद्भिर्गात्राणिशुध्यन्ति मनस्सत्येनशुध्यति ।
विद्यातपोभ्यांभूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेनशुध्यति ॥

अर्थात्– जल से शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य बोलने से शुद्ध होता है, विद्या ब्रह्मोपासना और तप धर्म्मोसाधन से जीवात्मा शुद्ध होता है, और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है इति।

सिद्धान्त यह है कि, एसा साधन करने से जीव सुखी रहेगा, और वेदानुकूल कर्म काण्ड में जैमिनी सूत्र, उपासना काण्ड में पतंजलि सूत्र, और ज्ञानकाण्ड अर्थात् मोक्ष में व्यास सूत्र और उपनिषद् सार है, और मोक्ष के वास्ते ही सारे कार किये जाते हैं इति ।

सब्रह्मासाविष्णुःसरुद्रस्सशिवस्सोक्षरस्सपरमः
स्वराट्सइन्द्रस्सकालाग्निस्सचन्द्रमा ।
ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

नमस्ते महाराजः–

इस के आगे सत्यमत निरूपण पुस्तक मेरी में देखो।

॥ इति समाप्ता ॥

——:०-०:——

॥ भूमिका ॥

आज कल इस आर्य्यावर्त्त देश में इतने मत फैल रहे हैं कि, जिन का शुमार करना भी कठिन है, और उन मतों में से सत्यासत्य का खोज करना भी कठिन है, सिवाय वेद मत के क्यों कि, वेद को छोड और कोई शास्त्र किसी मत का एकसा नहीं हैं कि, जिस में पक्षपात न हो और वह शास्त्र भी विचारे क्या करें जब स्वार्थियों ने अपने स्वार्थ के हेतु जो चाहा सो बना लिया, तथा ऊपर के ऋषि मुनियों के नाम धर के ग्रंथ रच लिये सो इस विषय में मैं ने कुछ सभा के तौर पर प्रश्नोत्तर करके लिखा है उसे पक्षपात रहित हो देखें।

इन्द्रप्रस्थ अर्थात् (देहली)
फाल्गुण सम्वत् १९४३।

(ग्रन्थ कर्त्ता)
वेद मतानुयायी,
जगन्नाथ गुप्त।

विज्ञापन ।

——:-0-:——

निम्न लिखित पुस्तकें नींचे लिखे पते से डाक महसूल और असल कीमत भेजने से घर वैठे मिल सक्ती हैं, परन्तु जो महाशय रु० ५०) अथवा इस से जादा का माल खरीदेंगे, उन को आधी कीमत पर सब पुस्तकें दीजायगी ।

सावित्री सत्यवान लीला ग्रहस्थियों की स्त्रीयों के पढ़ने योग्य .... ।)

सपेरा नाटक .... ॥)

गोविन्ददामोदर स्तोत्र ....)॥

रामाश्वमेध लीला ....।॥)

प्रातस्मरण ....)।

प्रेमरत्न प्रेम के दोहा कवित्त और छन्दों से भूषित.... .... ﴿)

वाइबिलविरोध .... ≶)

भगवान दास व्यास,

अध्यक्ष व्रजभूषण प्रेस ।

(श्रीमथुराजी)

गुरु विरजानन्द ...
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु ... क्रमांक 5063